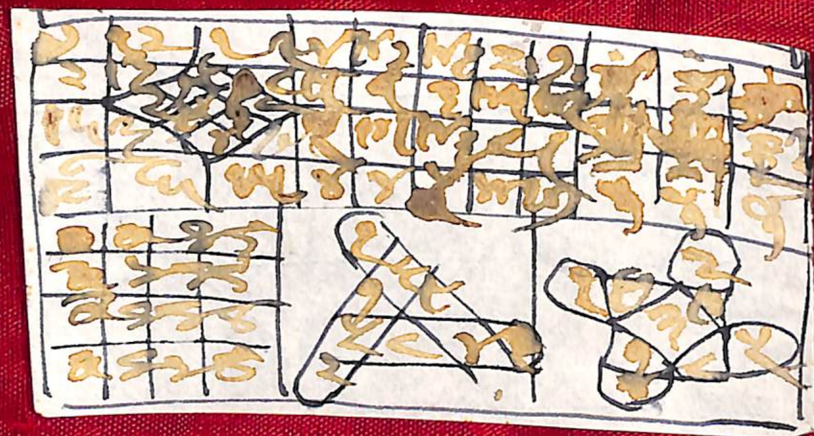
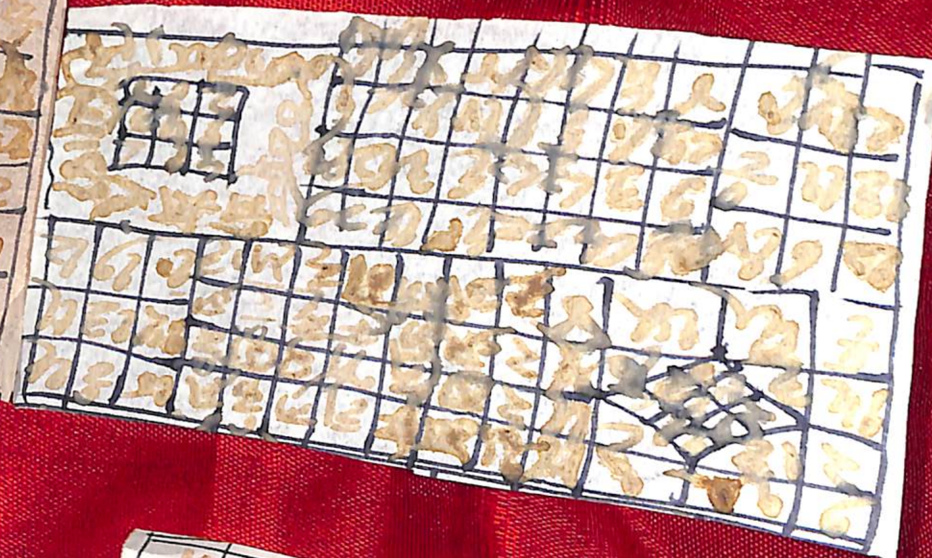
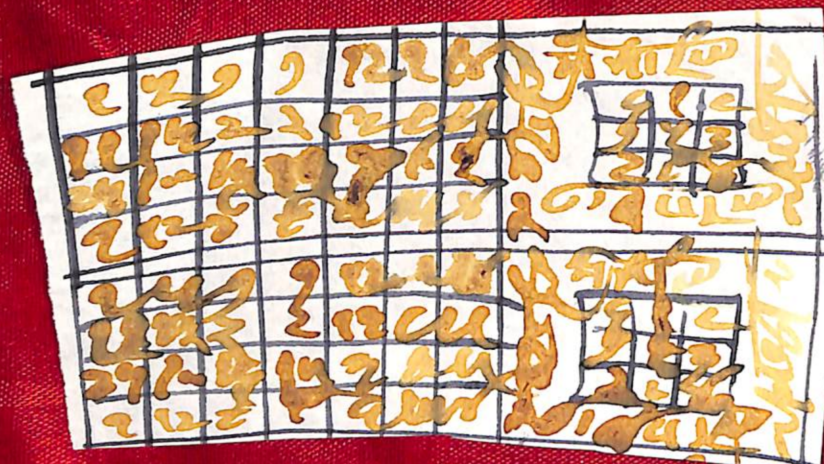
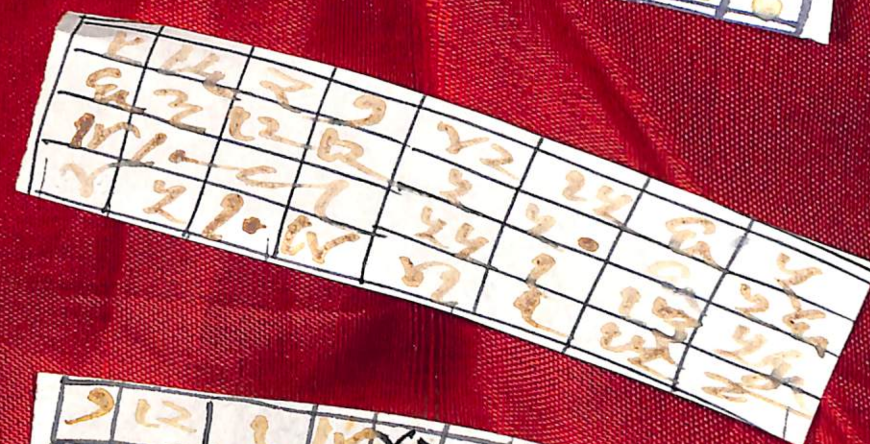
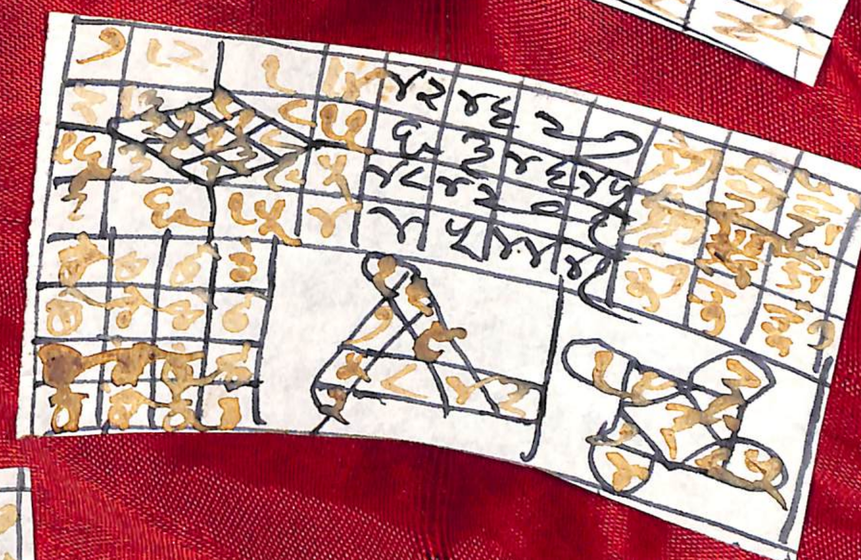
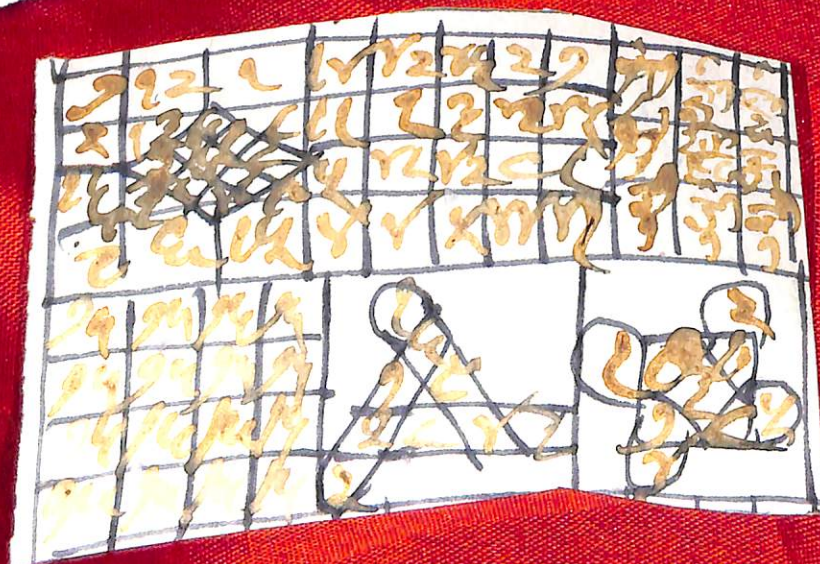





संवत विक्रमा
दो हज़्यार २०१२॥

ॐ श्री गणेशाय
नमः श्री रामे नमः

मास उत्तमे मासे शुभ कार्तीक मासे प्रकाशमाने
मासे कृष्ण पक्ष शुभ तिथी द्वादशी ॥१२॥

ओं स्वस्ति श्री गणेशाय नमः अथ बाल
चीकित्सा लेख्यते दोहरा॥ प्रथम मनमो
श्री विधना को बाहर धन्वंतर राय गुरु ग
णपति सारदा नमो दिजो वर सुख दाय:
(१) प्रथम रोग लछन कहूं बहुत उपाय
विधान॥ मंत्र यंत्र और औषधी तंत्र वली
वखानं (२) गर्भ मास ते आदले बालक
के सभ रोग सकल वयाधी निश्चै टरै कहयो
धन्वंतर योग (३) अथ कच्चा मसाण लक्षण
छंद:॥ गर्भ सरावति नार को जा को
रोग सुनिजे कच्ची मुरत डिग जय तिस
को कचचा मसाण भणे जे चार मास ते

ॐ श्री गणेशाय नमः अथ बालक
उत्पन्नते दश दिन तक चिकित्सा:
ग्रस्त पुतना आन के॥ धन्वति नाम
कहाया। जन्मत हि दिन प्रथम का जो
बालक हो जाय॥ लक्षण॥ बालक
दुधि ना पिवे शिर मारत और
पाव वौहत करएवत लाल मुख
येगनि ग्रस्त तव जान॥ बलि॥
मछी मधुर दुग्ध ले गुड़ समता
हि मलाय बलि जो। दिजै प्रातउठ
सभ पीड़ा मिट जाय॥ मंत्र॥ नमो
धनन्वनि (भगवति ([illegible] नाम
रमो बलिग्रह बाल का मुंच स्वाहा
इति॥ द्वितीय रात्रि का बालक होय
उई हो स्वास बकार समे मुत्र

प्रकाश रुदन करे ले नेत्र मिच-
-च्य ग्रसत योगनी ता कों जाय
पंचगव्य सो करे स्नान ॥ बलि ॥
ध्वजा पताका तंदुल पीत वस्त्र
त छ्वादिजिये। लौंग केशर मृम-
-य ॥ पात्र माहू धरे दक्षिण दिशा
बलि दै जाय सब रोग दूर
हो जाय ॥ इति द्वितीय रात्रि ॥
॥ तृतीय रात्रि ॥